।। वेदान्त पीयूष ।।

Postal Regd No : IDC/MP/966/2006-08 Indore मूल्य - रु १०/-, वर्ष -६ अंक-७६
आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या - एम.पी/हिन्दी/२०००/१०६०६ मई-२००८

।। अखण्डाकार वृत्ति ।।

जिस वृत्ति के द्वारा आत्मा की ब्रह्मस्वरूपता का अपरोक्ष ज्ञान होता है, उस 'अहं ब्रह्मास्मि' रूप वृत्ति को अखंडाकार वृत्ति कहते हैं। अखंडाकार वृत्ति का क्या स्वरूप होता है, यह अत्यन्त विचारणीय है। यह ज्ञान जगत् विषयक ज्ञान से अत्यन्त विलक्षण होता है। जगत विषयक ज्ञान में ज्ञाता किसी ज्ञेय को विषयीकृत करता है, तब तद्विषयक ज्ञान की वृत्ति उत्पन्न होती है। इससे विपरीत आत्मज्ञान में किसी भी विषय को नहीं बल्कि विषयी ही को जाना जाता है। 'अहं ब्रह्मास्मि' ज्ञान की वृत्ति को समझने के लिए पहले हमें किसी विषय के ज्ञान की वृत्ति के रहस्य को समझना चाहिए। जब कोई ज्ञाता किसी ज्ञेय पदार्थ को जानना चाहता है, तब वह उचित प्रमाण का प्रयोग करते हुए उस विषय की तरफ अभिमुख होता है, तथा उसका मन इन्द्रियों से प्रवाहित होता हुआ उस विषय को व्याप्त करता है और तब मन में तद्विषयक वृत्ति उत्पन्न होती है।

वृत्तिज्ञान के दो चरण होते हैं - १. वृत्तिव्याप्ति और २. फलव्याप्ति। वृत्तिव्याप्ति का अर्थ होता है कि किसी अज्ञात विषय को हमारा मन व्याप्त करता है। चिदाभास से युक्त हमारा मन विषय का भान उत्पन्न कर तद्विषयक अज्ञान की निवृत्ति करता है। उसके उपरान्त फलव्याप्ति होती है। फलव्याप्ति में अज्ञान के आवरण से रहित विषय को ज्ञाता जानता है, अर्थात् किसी भी विषय के ज्ञान में पहले उसके अज्ञान को दूर करा जाता है और तदुपरान्त उस जड़ विषय को हम प्रकाशित करते हैं। अज्ञान की निवृत्ति वृत्तिव्याप्ति से होती है और तदुपरान्त उस जड़ विषय को प्रकाशित करने को फलव्याप्ति कहते हैं। प्रत्येक विषयज्ञान में ज्ञाता के अन्तर्गत विद्यमान चिदाभास जड़ विषय को प्रकाशित कर ज्ञान की प्राप्ति करवाता है। विषयज्ञान में ज्ञाता प्रबुद्ध तो होता है, लेकिन हम ज्ञाता मात्र ही रहते हैं। विषय का ज्ञान त्रिपुटी (ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय) के अन्तर्गत होता है तथा ज्ञान के बाद भी यह त्रिपुटी बनी रहती है, बस ज्ञाता कुछ और प्रबुद्ध हो जाता है। ज्ञाता की परिच्छिन्नता एवं विविध चेष्टाएं और अस्मिता सभी अबाधित बनी रहती हैं।

इससे विलक्षण आत्माकार अथवा अखण्ड़ाकार वृत्ति में वृत्तिव्याप्ति तो होती है पर फलव्याप्ति नहीं होती है। आत्मा के अज्ञान की निवृत्ति तो आपेक्षित होती है लेकिन क्योंकि ज्ञेय पदार्थ स्वतः चेतन स्वरूप होता है अतः ज्ञाता के अन्तर्गत विद्यमान चिदाभास के द्वारा उसको प्रकाशित करने की अपेक्षा नहीं होती है। यह ज्ञान, ज्ञाता के तत्व से ही सम्बद्ध होता है, अतः उसका ज्ञातृत्व ही बाधित हो जाता है। ज्ञाता के बाधित होते ही समस्त अनुभूतियों का आधार त्रिपुटी भी शान्त हो जाती है और केवल उनके अधिष्ठान की तरह से विद्यमान अखण्ड, चिन्मय, आत्म-स्वरूप तत्व ही शेष रह जाता है, जिसके बारे में अज्ञान की निवृत्ति हो ही चुकी है। ज्ञातृत्व के सापेक्षता के ज्ञान के उपरान्त अपनी ब्रह्म स्वरूपता की अपरोक्षानुभूति ही अखण्ड़ाकार वृत्ति होती है। इस ज्ञान के अन्तिम चरणों में ज्ञाता ही नहीं रहता है अतः इस ज्ञान से कभी भी ज्ञाता में अभिमान की वृद्धि की सम्भवना ही नहीं होती है। अखंडाकार वृत्ति मानो जीव की आत्महत्या है। यह द्वैत से परे, गुणातीत की अवस्था है। यह तुरीय में जगने का द्वार है, जो अपने परिच्छिन्न ज्ञातृत्व की अस्मिता से परे जाना है। ज्ञाता कभी भी ब्रह्म को नहीं जानता है, बल्कि जब और जहां ज्ञाता समाप्त होता है, तब ही और उसी जगह पर ब्रह्म का साक्षात्कार होता है। जैसे स्वप्नाभिमानी तैजस कभी जाग्रत-अभिमानी विश्व को नहीं जानता है, बल्कि जिस समय तैजस समाप्त होता है, तब ही विश्व होता है, उसी प्रकार से ज्ञाता, ब्रह्म को कभी नहीं जानता है। जगने के बाद जैसे तैजस के कर्म, उपलब्धियों, संताप अथवा विशिष्टताओं का विश्व को कुछ भी नहीं लेना-देना होता है, उसी प्रकार तत्व-ज्ञान के उपरान्त हम भी जीव के कर्मादि से असम्बद्ध हो जाते हैं। हम जीव को किसी तीसरे व्यक्ति की तरह देखते हैं। जगने का मतलब ही होता है कि हमको यह भान हो गया कि हम यह जीव नहीं है, हम अखण्ड, अनन्त सच्चिदानन्द रूपी चेतनता हैं। हम इस बात को गंभीरता से समझते हैं कि जीव की सीमित अस्मिता तथा उसका अन्य पर आश्रित परिचय हमारा परिचय नहीं है। अखण्ड़ाकार वृत्ति जीव की यात्रा का अंतिम चरण है।

अगर ब्रह्म के ज्ञान के उपरान्त भी हमारी ज्ञाता की अस्मिता बनी रहती है, तो यह जानना चाहिए कि अभी हमारा ज्ञान परोक्ष मात्र है, जो कि मुक्ति प्रदायक नहीं बल्कि प्रेरक मात्र होता है। यदि हम ब्रह्म के ज्ञाता बनकर उसे जानते हैं, तो ब्रह्म हमारी श्रद्धा या कल्पना का विषय ही है। ऐसा ज्ञान अभिमान एवं संसार का निवर्तक नहीं होता है।

हर परिस्थिति में ईश्वर के संकल्प को उद्‌घाटित होता हुआ देखना चाहिए।

वेदान्त आश्रम, E / 2948-50, सुदामा नगर, इन्दौर - 452 009

पिछले श्लोक में महर्षिजी ने बताया कि अहं कहां से आता है, इस मैं पर प्रामाणिक तरीके से विचार करने पर उसका मानो अस्तित्व ही नहीं रहता है। यदि अहं का नाश हो गया तो क्या शून्यता की अवस्था प्राप्त होगी? इस विषय पर महर्षिजी अब यहां चर्चा करते हैं।

> अहमि नाशभाज्यहमहंतया।
> स्फुरति हृत्स्वयं परमपूर्णसत्॥ (20)

अहं के नाश होने पर उसके साररूप परिपूर्ण सत् तत्त्व अहं की तरह से स्फुरित होता है।

उपदेश सार

प्रत्येक व्यक्ति के मन में 'अहं वृत्ति' का स्फुरण होता है। यह वृत्ति मन के अस्तित्व में आने पर भान होती है, तथा मन के अभाव में इस वृत्ति का भान नहीं होता है। इस वृत्ति का भान होना यह मन का स्वभाव है तथा इसके स्फुरित होने में कोई समस्या भी नहीं है। जैसे दर्पण जब तक है, तो प्रतिबिंब का भान बना रहता है, उसका प्रयोग भी होता है, इसका होना कोई समस्या नहीं है। समस्या तो तब होती है, कि प्रतिबिंब के धर्मों को अपने धर्म मान लिया जाय। जिस समय मैं वृत्ति का भान होता है, तो वह किसी न किसी बाह्य वस्तु, व्यक्ति अथवा परिस्थिति के साथ तादात्म्य करके उसके माध्यम से अपनी सीमित तथा विकारी अस्मिता प्राप्त करता है। अपने बारे में सीमित अस्मिता ही संसार व दुःख का कारण बनती है।

इसके लिए प्रथम सोपान पर तो अपनी बाह्य वस्तु आदि से प्राप्त अस्मिता के उपर विचार करते हुए यह निश्चय करना चाहिए कि समस्त दृश्य पदार्थों से हम पृथक् उसके साक्षी - दृष्टा स्वरूप हैं। हम साक्षी होने की वजह से उनके धर्मों से अप्रभावित हैं। अपने बारे में समस्त दृश्य पदार्थों के साक्षी होने का निश्चय किया जाता है, तो न कोई दृश्य के रहने वा न रहने का संकल्प होता है, न ही किसी परिवर्तन की अपेक्षा होती है। ऐसे निरपेक्ष दृष्टृत्व को प्राप्त होता है।

अपने आप को दृष्टा समझने का परिणाम यह अवश्य होता है कि निरपेक्षत्व से युक्त हो जाते हैं, बाह्य परिस्थितियों में अप्रभावित रहने का सामर्थ्य उत्पन्न हो जाता है, किन्तु अभी भी अपनी अस्मिता तो सीमित ही है। हम साक्ष्य पदार्थ की अपेक्षा साक्षी है। अर्थात् अभी भी अस्मिता दृश्य पदार्थो के माध्यम से ही प्राप्त होती है। अतः अपने से पृथक् समस्त (अपनी देहादि उपाधि समेत) दृश्य पदार्थों की अनित्यता की वजह से उसे मिथ्या जानें। जब समस्त साक्ष्य पदार्थ ही मिथ्या है, यह जाना तो हमारा साक्षी होना भी मिथ्या ही सिद्ध हो जाता है। साक्षी साक्ष्य की अपेक्षा, दृष्टा दृश्य की अपेक्षा ही होता है। जब दृश्य नहीं है, तो दृष्टापना भी नहीं होता है। दृष्टा एक परिवेश मात्र था, परिवेश के त्याग से जो परिवेश धारण करने वाला है, वह समाप्त नहीं होता है, किन्तु वह तो समस्त परिवेश से रहित एक अखंड सत्ता बनकर स्थित रहता है। जिसमें दृष्टा-दृश्य-दर्शन आदि रूप समस्त खंड का अभाव है। इस प्रकार अहं के नाश का स्वरूप उसका अभाव नहीं है, किन्तु उसके द्वारा धारण किए गए सापेक्ष व कल्पना के आधार पर टिकी हुई सापेक्ष अस्मिता मात्र का त्याग है। इन झूठी अस्मिता के त्याग के उपरांत हम जो शेष रहते हैं, वह समस्त देशादि की सीमाओं से परे, परिपूर्ण, अखंड सत्ता मात्र ही रहती है।

जीवन में एक संकल्प लेकर उसमें दृढ रहें यह आध्यात्मिक विकास तथा लौकिक सफलता का अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू होता है। मन में कई बार पाप सिर उठ़ाता है, और हम कर्तव्य से च्युत होने लगते हैं। अतः यह महत्वपूर्ण है कि हम सत्य संकल्प हों। बहुत सारी बहुआयामी इच्छाओं की वजह से मूल लक्ष्य की स्थिरता नहीं, क्योंकि अनेकों संकल्प हैं। हमें संकल्प शक्ति बढानी पड़ती है, एक बांध के द्वारा। हम सत्यसंकल्प हो। जिन्होंने जीवन में कुछ करा है, वे सत्यसंकल्प होते हैं। यदि किसी में सत्यसंकल्पता हो तो जीवन में क्रान्ति होगी। उनमें धर्मसंकट नहीं होता है। धर्मसंकट दोराहे पर खड़े होना है। सत्य संकल्प को धर्मसंकट नहीं क्योंकि उनमें यह स्पष्ट है कि उसे क्या करना है। यह निश्चय ही एक मात्र उनके लिए पथ है। यह ही धर्म संकट की निवृत्ति का महत्वपूर्ण कारण होता है। असफल, दुःखी वह ही होता है, जो एक चीज में स्थिर नहीं। जब तक फल आए तब तक संकल्प ही बदल जाता है। हमारी अस्थिरता संकल्प की दृढता का अभाव है। अन्यथा उतार चड़ाव से संकल्प प्रभावित नहीं होने चाहिए। संकल्प की सच्चाई की परीक्षा आपद काल परिखेहुं चारि।

संकल्पशक्ति को बढ़ाने के लिए जीवन में नियमपालन का बड़ा ही महत्व होता है। इससे रजोगुण तथा तमोगुण वश में आते हैं, तथा संकल्पशक्ति दृढ होती है।

ईश्वरीय संकल्प के अधीन जीवन शरणागति होती है।

जो यह पढै हनुमान चालीसा। होइ सिद्धि साखी गौरीसा।।

***जो** कोई इस हनुमान-चालीसा का पाठ़ करता है, तो उनको इष्ट सिद्धि की प्राप्ति होती है, इस विषय में स्वयं गौरीपति महादेवजी साक्षी है।*

गोस्वामीजी इस स्तुति के पाठ़ का फल बताते हैं, कि हनुमान चालीसा का पाठ़ करने से सिद्धि प्राप्त होती है। इसको प्रामाणित करते हुए कहते हैं कि इस विषय में स्वयं महादेवजी साक्षी हैं। पाठ़ से सिद्धि तो अवश्य प्राप्त होती है, किन्तु इस सिद्धि का स्वरूप और प्राप्ति की प्रक्रिया जानना आपेक्षित है। अधिकारी भेद से सिद्धि का अर्थ भिन्न-भिन्न होता है।

| हनुमान चालीसा |

हनुमान चालीसा का हनुमानजी के प्रति श्रद्धा और भक्ति से युक्त होकर पाठ करने के द्वारा हनुमानजी के चरित्र पर समग्रता से मनन और चिन्तन किया जाता है। इससे न केवल हनुमानजी जीवन में आदर्शकी तरह प्रतिष्ठापित होते हैं, किन्तु हनुमानजी के गुणों का समावेश भी होने लगता है। जिस समय कोई व्यक्ति सकामता से प्रेरित होकर किसी विशेष फल की प्राप्ति के लिए पाठ़ करता है, तो भी हनुमानजी की तरह कार्य में निष्ठा और समग्रता से कर्म करने रूप गुण की प्राप्ति होने लगती है। इस प्रकार कर्म करने मात्र से कार्य सफल होने की सम्भावनाएं बढ़ जाती हैं। दूसरी ओर निष्काम भक्त जो किसी लौकिक उपलब्धियों के लिए नहीं करता है, किन्तु भक्तिभाव से प्रेरित होकर करता है, उनके अन्दर निष्कामता और प्रभु के प्रति भक्ति और वृद्धि को प्राप्त होती है। उससे मन शान्त, एकाग्र, निष्काम, निश्चिन्त होने लगता है। ऐसे साधक के लिए निष्कामता की सिद्धि है। यह ही भक्ति का महान फल होता है। ऐसे मन से युक्त होने पर ही मुक्ति की अवस्था की प्राप्ति हो सकती है।

कठोपनिषद् के नायक नचिकेता का व्यक्तित्त्व एक शांत, तेजस्वी एवं अदम्य साहसी व्यक्ति की तरह सामने आता है। कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता के पिता उद्दालक जी ने एक विश्वजित् यज्ञ किया जिसमें सर्वस्व दान देना होता है। किन्तु पुत्रासक्तिवशात् दान देने के समय उनका हाथ पीछे हट गया और वे दुर्बल अनुपयोगी गायों को दान में देने लगे। नचिकेता पिता के कार्य को अनुचित देखते हुए उनके पास जाकर अत्यन्त शिष्टाचार एवं युक्ति से पूछता है कि 'हे पिताजी! आप मुझे किसे दान में दे रहे हैं? पिता के द्वारा उपेक्षा करने पर भी नचिकेता ने अपना प्रश्न बार बार दोहराया। यह देख कर वाजश्रवा मुनि क्रुद्ध हो उठे। और 'जाओ, मरो जाकर' के भाव में बोलें कि, 'मैं तुम्हें मृत्यु को देता हूं।' यज्ञ-स्थल से दी गई पिता की इस आज्ञा को को नचिकेता ने गम्भीरता से ले लिया और यमराज से मिलने उनके द्वार तक पहुंच गया।

॥ नचिकेता ॥

जब वह यम के द्वार पर पहुंचा तो यमराज कहीं बाहर गए हुए थे। यह देख कर नचिकेता तीन दिन और रात निर्जल, निराहार रहते हुए प्रतीक्षा करने लगा। यमराज ने आकर जब देखा कि एक ब्राह्मण अतिथि उनके घर तीन दिन तक बिना भोजन पानी के रहा तो उन्हें बड़ी ग्लानि हुई। उन्होंने प्रायश्चित के तौर पर नचिकेता को तीन वर मांगने को कहा। नचिकेता ने प्रथम वर पिता के मन की शान्ति हेतु आशिर्वाद मांगा, दूसरा जनहित के लिए स्वर्ग-लोक से लक्षित ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु विद्या मांगी। तीसरे वर की तरह नचिकेता ने वो मांगा जिससे यमराज भी आश्चर्यचकित रह गए। नचिकेता ने कहा कि 'हे मृत्यु के अधिष्ठाता! यदि आप हम पर प्रसन्न है तो आप हमें जन्म और मृत्यु के रहस्य के बारे में समझाईए। मृत्यु के बाद क्या है? आत्मा का अस्तित्व रहता है या नहीं?' यमराजजी ने नचिकेता को बताया कि यह विषय अत्यन्त सूक्ष्म एवं जटिल है, अतः इसे छोड़ कर कोई अन्य ही वर मांग लो। उन्होंने नचिकेता को परीक्षार्थ उसके समक्ष अनेकों दिव्य धन-सम्पत्ति, भोग आदि रूप प्रलोभन रखे किन्तु नचिकेता लेश मात्र भी विचलित नहीं हुआ। समस्त संसार को भयभीत करने वाले परं प्रतापी यमराज आज नचिकेता की निष्ठा एवं जिज्ञासा से भाव-विभोर हो गए थे। नचिकेता विजयी हुआ और अन्ततः जन्म-मरण एवं आत्मा के रहस्य को जानकर ही लौटा। ऐसा था कठोपनिषद् का नायक नचिकेता! धीर, उदात्त, निर्भीक, परं जिज्ञासु, सत्यान्वेषी तथा जीवन-मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध, अन्याय एवं अधर्म के विरुद्ध संघर्षरत, मरणधर्मा होते हुए भी अमरत्व का साधक! उनके साहस एवं सत्यनिष्ठ आचरण की वजह से मरण का वरण करने में चरण कांपे नहीं। बल्कि मृत्यु के पास जाकर भी नचिकेता अलौकिक तेज से युक्त होकर लौटा। मृत्यदेव ने उसे आत्मज्ञान देकर अन्त में कहा, 'एतदनुशासनम्'! इससे परे ओर कुछ कहने को वा कुछ देने को शेष नहीं है। तुम जैसे शिष्य को पाकर हम धन्य हो गए।

मिशन समाचार

वेदान्त आश्रम, इन्दौर :- वेदान्त आश्रम, इन्दौर में प्रतिदिन पूज्य गुरुजी के द्वारा प्रातः ७.३० बजे से लक्ष्मीधर कवि कृत 'अद्वैत मकरंद' ग्रंथ पर प्रवचन चल रहे हैं तथा १०.३० बजे श्रीमद् भगवद्गीता पर प्रवचन चल रहे हैं। प्रातः ६.०० और सायं ७.०० बजे भगवान श्री गंगेश्वर महादेवजी की आरती होती है। प्रति सोमवार को गंगेश्वर महादेव का रुद्राभिषेक किया जाता है। इसके अलावा वेदान्त आश्रम गुरुकुल में अंग्रेजी भाषा में वेदान्त का संक्षिप्त कोर्स आरम्भ हुआ है। जिसमें पूज्य गुरुजी द्वारा 'वेदान्त सार' ग्रंथ का अध्ययन कराया जाता है, उसके अलावा गीता, संस्कृत तथा स्तोत्र-पाठ भी सिखाया जा रहा है।

वेदानत आश्रम में होली के पर्व सायं आरती के पश्चात् सुन्दर काण्ड का पाठ किया गया।

वेदान्त मिशन, मुम्बई:- वेदान्त मिशन, मुम्बई द्वारा पू. स्वामिनी समतानन्दजी के गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन दि. १६ से २० मार्च तक खार, मुम्बई स्थित नेशनल कालेज में किया गया। इस यज्ञ के सायं के सत्र में स्वामिनीजी ने गीता के सत्रहवें अध्याय श्रद्धात्रय विभागयोग पर प्रवचन किए, तथा प्रातः का सत्र वेदान्त मिशन की आफिस के हाल में किया गया। इस सत्र में स्वामिनीजी ने आदि शंकराचार्यजी द्वारा रचित 'साधना पंचकम्' ग्रंथ पर व्याख्या की।

गीता ज्ञान यज्ञ (पूज्य गुरुजी द्वारा)

दिनांक – २६ अप्रैल से २ मई
समय – प्रातः एवं सायं ७ से ८.३०
विषय – मुंडक उपनिषद्-२ एवं गीता अ – १४
स्थान – रामकृष्ण केन्द्र, अहमदाबाद

दिनांक – २१ मई से २५ मई
समय – सायं एवं प्रातः ७ से ८.३०
विषय – गीता अ-१५, मुण्डक उपनिषद्-२/२
स्थान – नेशनल कालेज हाल, बान्द्रा, मुम्बई

साधना शिविर

दिनांक – १८ से २४ जून
विषय – कठोपनिषद्, गीता अध्याय ७
स्थान – स्वामी दयानन्द आश्रम, पुरानी झाड़ी, ऋषीकेश।

इच्छुक साधक शीघ्र ही वेदान्त मिशन अथवा वेदान्त पीयूष के कार्यालय में सम्पर्क करें।

पू. स्वामिनी समतानन्दजी प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी गीता के प्रचार हेतु यू.के. दो माह के प्रवास पर जाएगी। वे ३० मई को मम्बई से प्रस्थान करेगी।

मुखाभासको दर्पणे दृश्यमाने। मुखत्वात्पृथक्त्वेन नैवास्ति वस्तु ।
चिदाभासको धीषु जीवोऽपि तद्वत्। स नित्योपलब्धिस्वरूपोऽहमात्मा।।

जैसे दर्पण में उपलब्ध हो रहे प्रतिबिम्ब का मुखरूप बिम्ब से पृथक् कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं होती, उसी प्रकार बुद्धि में प्रतिबिम्ब स्थानीय चेतनता के आभास रूपी जीव का भी हम बिम्ब स्थानीय चेतनता से पृथक् कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। हम वह ही नित्य उपलब्ध आत्मतत्त्व हैं।

—: शुभ कामनाओं सहित :—

1. Sh. P.H. Shah, Ahmedabad
2. M/S Punit Apparels Pvt. Ltd., Indore
3. M/S Samarpan Engg. & Mkt. Pvt. Ltd., Indore
4. Sh. Chandru Kukreja, Mumbai
5. M/S Pharmalab India Pvt. Ltd., Mumbai
6. M/S Elite Housing Developement Pvt. Ltd., Mumbai

-: वेदान्त पीयूष :-
स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक :- स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती के लिये, तुलिका प्रिन्टिंग मन्दिर, ३४ ए ग्रीनलेण्ड कॉलोनी, स्नेहनगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 'वेदान्त आश्रम', ई-२६४८.५० सुदामा नगर, इन्दौर से प्रकाशित।
सम्पादक :- स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती Tel : 0731-2486055, 9302107229 ; E mail- info@vmission.org
आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या - एम.पी/हिन्दी/२०००/१०६०६